

1890 ने उत्तरी अमेरिका के यह युद्ध पर प्रकाश डाले। यह निबंध लिखें।
उत्तर ने जिस समय लिंग अमेरिका के राष्ट्रपति के पद के लिए चुने गए, उस समय देश की स्थिति अत्यंत विकसित थी और उत्तर व दक्षिण का विद्वेष पूर्ववत् विद्यमान था जो 1860 ई तक इतना अधिक बढ़ गया था, कि संघसौते की संभावनाएँ धूमिल पड़ गयी थी। राजनीतिक झूझ-पूझ असफल हो रहे थे वही दक्षिण ने संघ से अपना संबंध तोड़ लिये। दक्षिण के विद्रोहकार यह युद्ध के विरुद्ध के लिए उत्तर वालों को जिम्मेदार बनाने लगे क्योंकि वही पर दास प्रथा के विरोधी संस्थाओं का संगठन हुआ था और वही स्वतंत्र छवि बनाना था साथ ही मजदूर दास अधिनियम, भाषणों व समाचार-पत्रों द्वारा दक्षिण के राज्यों की विद्या और डेस्कॉल के मुकदमों का मान्यता न देकर उत्तर वालों ने यह युद्ध का अनिवार्य बना दिया था।

उत्तर के इतिहासकारों ने दक्षिण वालों को इसके लिए उत्तरदायी ठहराते हुए उन पर आरोप लगाये कि दास स्वामी के पड़ोस, दास प्रथा के विरोधियों पर निरन्तर हमले, मिश्री संघसौते का निरस्तीकरण, मुक्त निमोज का वलपूर्वक पक्ष तथा दक्षिण वालों की हिला की प्रवृत्ति यह युद्ध के लिए उत्तरदायी थी, परन्तु दोनों दृष्टिकोण सच और झूठ पर आधारित थी अतः अमेरिकी यह युद्ध के प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष अनेक कारण हैं, जिनमें निम्नलिखित प्रमुख कारण हैं :-

① दास प्रथा : — उत्तरी अमेरिका के इतिहास में दास प्रथा का विवाद अत्यंत प्राचीन था दास मालिकों ने राज्य संप्रभुता के प्रश्न पर संविधान की अनेक लाकड़ों प्रस्तावों और संघ से अलग हुए उत्तरवासीयों के दिल में अविश्वास और शीघ्र फैला करने वाले अनेकानेक कार्य किये गए लिंग मणी भाति जागता था, कि उन्मूलन समर्थकों की संख्या अत्यंत कम है अतः अपने अत्यंत समझ-बूझ के साथ आगे बढ़कर उद्योग और परिस्थिति के अनुसार अपनी नीति व कार्यशैली को बदला तथा 10 अप्रैल 1862 ई को 'मॉरीस' ने उन राज्यों की सहायता करने का निर्णय कर लिया जो दास मुक्ति पक्षों को व्यवहारिक रूप में कार्य में परिणित करने के लिए तैयार थे और अगामी 6 दिन बाद ही दास प्रथा को कुलविना डिस्ट्रिक्ट में निरस्त कर दिया गया और 19 जुन 1862 ई को संयुक्त राज्य के समस्त क्षेत्रों में दास प्रथा को स्वयंसेवक कर दिया गया, जिससे दास प्रथा की कोई सीढ़ की हड्डी बच गयी।

② संघ के एक की सुरक्षा : — संघ के एक में राष्ट्रपति लिफ्ट को पूर्ण विश्वास था। उसका विचार कदापि उसके लिए असह्य था। उसका बगाने स्वयं के लिए उसके पास राज्य के अतिरिक्त कोई दूसरा विकल्प नहीं था। अमेरिका के संघीय राज्य के लिए एक अस्थायी संविधान पारित कर दिया गया। तब भी बर्माबिक व दास प्रथा के अन्य तरह पोषण राज्य शासन बने पारना कान की ओर देखते रहे।

मार्च 1861 ई में न केवल अस्थायी संविधान विधान मंत्र अल्प संघों से उसकी पुष्टि कराकर चुनाव व्यवस्था में करा दिए गये। नवीन संविधान प्रारंभ सीमा तक संघीय राज्य संघ के संविधान के अनुक्रम पर प्रभु इसके निर्णायक अधिकारों में अत्यधिक कमी कर दी गयी थी। इसकी सर्वाधिक उल्लेखनीय धारा यह थी, कि दक्षिण संघ की सदस्यता ग्रहण करने लगभग प्रत्येक राज्य की स्थिति सत्ता - धारी स्वतंत्र राज्य के समान थी।

③ उत्तर व दक्षिण का परस्पर विरोध : — दक्षिण के राज्य राष्ट्र संघ से अलग होना नियमानुसार सम्भव था। इसका प्रथम कारण राष्ट्रीय प्रमुखता का सिद्धांत था और दूसरा उनके विचार से उत्तर वाले उनके अधिकारों का हनन कर रहे थे और दास प्रथा का उन्मूलन करना चाहते थे।

④ दक्षिण का द्वितीय : — दक्षिण की समस्या जनता समझ रही थी इसीलिए वे संघ-विच्छेद के पक्ष में नहीं थी। साउथ कैरोलिना को छोड़कर शेष सभी राज्यों ने उसका विरोधी दल भी था वे संघ में कम थे, परन्तु वे चिन्तनीय थे। हैम्बोल्ड के क्षेत्र सेक्टर ने इस संबंध-विच्छेद को अस्वीकार नहीं समझता था। परन्तु दक्षिण के लोगों की धारणा थी कि इस संबंध-विच्छेद के बाद दास व्यापार को बढ़ावा या संकेत और प्रभुता तथा राज्य अमेरिका में प्रतिष्ठित करके कापस के उत्पादन की बढ़ावा संभव होगा इसमें इन्वैण्ड की संयोजन की संभावना थी क्योंकि रुई के अभाव में इन्वैण्ड के कारखानों पर विपरीत प्रभाव पड़ सकता था। दक्षिण वाले उत्तर को कापस व कुर्वल समझते थे और उन्हें धन प्रीति मानते थे जो पुष्टि कर सकते थे।

प्रारंभ में ऐसा प्रतीत हुआ था कि दक्षिण

के राज्य-संबंध विच्छेद के अपने उद्देश्य में सामल हो जायेगे, परन्तु अब गवर्नरी में दक्षिण के सदस्य-कैबिनेट से हट जाये तब स्थिति बदल जाय और राष्ट्रपति की इच्छा के देखते हुए दक्षिण संघ में अपनी सीमा के संघीय क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया परन्तु फिर भी समुद्र और पिकेंस के दुर्गों पर संघ का अधिकार बना रहा। बुकानिन इसके सम्पन्न के लिए तैयार नहीं था जिस कारण सर्वप्र बुकानिन की निन्दा की जान लगी। इसी बीच दक्षिण के लोगों ने पश्चिम का तारा नामक जहाज पर गोलावारी की किछु कसे उत्तर में कोई उत्तेजना नहीं थी।

(5) उत्तर का दृष्टिकोण : — कॉन्ग्रेस के नेता चाहते थे, कि दक्षिण वालों में मत परिवर्तन करा दें किन्तु केंद्री ने गॉन-ऑ-क्रिस्टेडन के अतिरिक्त किसी भी योजना को विशेष महत्व नहीं दिया। उत्तर के लोगों ने भी क्रिस्टेडन की योजना का समर्थन किया, परन्तु रिपब्लिकन क्लब ने मिथुरी प्रत्यावर्तन से इंकार कर दिया तब संघ-शासन ने कोई निश्चित कदम नहीं उठाया। लिंकन ने कभी भी संघ के प्रत्यावर्तन का द्वार बन्द नहीं किया। अपने उद्घाटन भाषण में उसने इस बात पर बल दिया कि दक्षिण के राज्यों को संबंध विच्छेद का कोई अधिकार प्राप्त नहीं है, क्योंकि सामग्री देश भौगोलिक दृष्टि से एक दूसरे से संबद्ध है। अतः उसने दक्षिण राज्यों से अपना दृष्टिकोण बदलने का भी आग्रह किया, परन्तु उसने लिंकन के इस बात की ओर ध्यान नहीं दिया क्योंकि वह पहले ही अपने हार्ड जहाज बना चुके थे।

(6) लिंकन का दृष्टिकोण : — अपने भाषण के दौरान लिंकन ने भी पिकेंस और समुद्र दुर्गों के संबंध में कोई निर्णय नहीं लिया, क्योंकि वाशिंगटन में कोई ऐसा कार्य करना नहीं चाहता कि जोष काह दास प्रथा समर्थक राज्य भी दक्षिण के साथ गठबंधन कर लें। अतः वह लम्बे समय तक इस समस्या पर विचार करते रहे। राष्ट्रपति सीरीड के इस प्रस्ताव को भी उसने स्वीकार नहीं किया कि यूरोप के राष्ट्रों से संबंध लेकर संघ का एक प्रत्यावर्तन किया जाए। 6 अप्रैल को लिंकन ने दुर्गों में प्रवर्तन सेना भेजने का आदेश दिया। लिंकन ने संयुक्त राज्य के नियमों के प्रवर्तन का सारा लेकर 75000 स्वयंसेवक भर्ती करने का आदेश दिया, ताकि दक्षिण संघ के वदरगाहों का बेरा-डाला जा सके।

आठ राज्यों के लिए यह आवश्यक हो गया कि वे किसी न किसी पक्ष को ग्रहण करें। चार राज्यों - वर्जीनिया, नॉर्थ, कैरोलीना, बैंगमाली, और आरकन्सास ने दक्षिण संघ में सम्मिलित होने का निर्णय लिया और शेष चार राज्यों - मेरीलैण्ड, डेलावेयर, केंटकी और मिचिगन पुराने संघ के साथ रहे। यह युद्ध के प्रारंभ में प्रत्येक एक दुसरे की तुलना में अपनी शक्ति को अधिक बढ़ाकर कर रहा था और जीत विजय का स्वप्न देख रहा था, परन्तु यह युद्ध चार वर्षों तक जारी रहा और इसमें अपार जंग और व्यय की धारें हुई। अंतर्गत विचारों की उत्पत्ति हुई और 26 मई 1865 ई को परिसंघ के सदस्यों ने पूर्णतः आत्म-समर्पण कर दिया जिससे चार वर्षों से चल आ रहा यह संघर्ष गृह युद्ध समाप्त हो गया।

लिंगर एक योग्य और कुशल राष्ट्रपति था। अमेरिका में विशिष्टता के बाद उसकी गणना कुशल राजनीतियों में की जाती थी। पहले देश को स्वतंत्रता दिलाती, दुसरे ने एकता के लिए अपने प्राणों को त्याग दिया यदि प्रथम वीर योद्धा और प्रथम रचनात्मक प्रतिभा स्वामी था तो दुसरा साधक के एक कुशल नेता था। जीवित संकट में भी अपने मानसिक संतुलन को न बिगड़ने देने की लिंगर ने अद्वैत धर्मवादी। गृह-युद्ध के मूलतः दो उद्देश्य थे: - (1) दक्षिण का अन्त तथा (2) देश की एकता की सुरक्षा, जिन्हें प्राप्त करने में लिंगर ने पूर्णतः सफल रहा। अपने महत्व की प्राप्ति के लिए कभी-कभी उसे कठोर नीति का भी सहारा लेना पड़ा जिस कारण उनकी कैबिनेट को जालीय चर्चाओं का भी सामना करना पड़ा, परन्तु अंत में अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति के कारण वह अपने उपर्युक्त दो उद्देश्यों की पूर्ति में सफल रहे।

समाप्त